2.

चाँदी की टोकरी

(कहानी)

यह एक लोक कथा है। इसमें यह दर्शाया गया है कि किसी भी घटना के अच्छे व बुरे दोनों रूप होते हैं। कई बार कोई आकस्मिक घटना किसी का भाग्य बदल देती है। एक नौकर एक दिन राजा बन जाता है और राजकुमारी से शादी करने में सफल हो जाता है।

नर्मदा नदी के तट पर राजा चित्रदेव का महल था। उस महल में अनेक नौकर-चाकर थे। उन्हीं में एक था– गोविंद।

एक दिन सवेरे की बात है। राजकुमारी नंदिनी महल के बगीचे में फूल तोड़ने गई। उसके साथ गोविंद भी था। नंदिनी के हाथों में चाँदी की टोकरी थी। वह तरह-तरह के फूल तोड़कर अपनी चाँदी की टोकरी में डालती जा रही थी। जब टोकरी पूरी तरह से भर गई तो वह महल की ओर चल दी।

वापस लौटते समय उसे एक लंबी सफेद दाढ़ी तथा जटाजूट वाला एक बूढ़ा दिखाई दिया। वह महल के बाहर बैठा हुआ था। उसके चारों ओर काफी लोग जमा थे। बूढ़ा उनसे बातें कर रहा था।

"गोविंद, वह बूढ़ा कौन है?" नंदिनी ने पूछा, "और वह वहाँ बैठा क्या कर रहा है?"

"मैं अभी पता करके आता हूँ,' गोविंद ने कहा," तब तक आप यहीं रुकी रहें।" – ऐसा कहकर गोविंद बूढ़े की तरफ चल दिया।

कुछ ही मिनटों बाद वह लौट आया और राजकुमारी से

Scanned with CamScanner

बोला– "बूढ़ा ज्योतिषी है। वह कहता है कि मैं किसी को भी यह बता सकता हूँ कि उसकी शादी किससे होगी।"

"सच!" राजकुमारी ने चकित होकर पूछा, "कैसी अनोखी बात है। पर वह यह बताता कैसे है?"

"वह घास के दो तिनके लेकर उन्हें आपस में बाँध देता है, गोविंद ने समझाते हुए कहा, "और फिर कहता है कि यह विवाह की ब्रह्म-गाँठ है।"

"तुम फिर बूढ़े के पास जाओ," राजकुमारी ने कहा, "और उससे यह पूछकर बताओ कि हमारी शादी किससे होगी?"

गोविंद ने राजकुमारी को समझाया–"राजकुमारी ऐसा करना बुद्धिमानी नहीं होगी। इस तरह के ज्योतिषी लोगों को खुश करने के लिए झूठ-मूठ की बातें करते फिरते हैं। यह उनका रोज़ी कमाने का धंधा है। ऐसे लोगों से बचकर रहने में ही भलाई है।"

"हमने तुम्हारी राय नहीं पूछी," राजकुमारी ने तुनककर कहा, "फौरन जाओ, जो कुछ हम कह रहे हैं, वह पूछ कर आओ।"

"अच्छी बात है राजकुमारी," गोविंद ने कहा "अगर आपकी यही आज्ञा है तो मैं जाकर पूछ आता हूँ।"

गोविंद एक बार फिर बूढ़े के पास गया। राजकुमारी वहीं पर खड़ी होकर उसका इंतज़ार करती रही।

"मैं राजमहल से आया हूँ," गोविंद ने ज्योतिषी के पास जाकर उसके कान में फुसफुसा कर कहा, "मैं तुमसे अकेले में बात करना चाहता हूँ ताकि हमारी बात कोई न सुन सके।"

बूढ़ा लोगों के बीच में से उठकर गोविंद के साथ एक कोने में चला गया।

"बोलो, क्या पूछना चाहते हो?" बूढ़े ने गोविंद से कहा।

"राजकुमारी नंदिनी यह जानना चाहती हैं कि उसकी शादी किससे होगी?" गोविंद ने कहा।

बूढ़े ने घास के दो तिनके उठाए और उन्हें बाँधकर एक गाँठ बनाई। कुछ देर तक वह बड़े गौर से गाँठ को देखता रहा। फिर गोविंद की ओर देखकर मुस्कराने लगा।

"राजकुमारी नंदिनी की शादी तुमसे होगी," बूढ़े ने कहा। "मुझसे?" गोविंद भौंचक्का होकर बोला, "मैं तो उनका नौकर हूँ, सिर्फ नौकर। तुम्हारी बात गलत है, बिल्कुल गलत"

"मेरी बात गलत हो ही नहीं सकती," बूढ़े ने कहा, "तुम्हीं उसके होने वाले पति हो।" गोविंद धीरे-धीरे भारी कदमों से महल की ओर चल दिया।

Scanned with CamScanner

"क्या हुआ?" नंदिनी ने उसे देखते ही पूछा, "ज्योतिषी ने क्या कहा?"

"राजकुमारी," गोविंद ने गंभीर होकर कहा, "मैंने आपसे पहले ही कहा था कि ऐसे ज्योतिषी कभी सच नहीं बता सकते। इस ज्योतिषी ने भी ऐसी बुरी बात बताई है कि मैं उसे जुबान पर भी नहीं ला सकता।

"यह मेरा हुक्म है, जो बूढ़े ने कहा है, तुम्हें बताना होगा।"

"ज्योतिषी ने कहा है कि आपकी शादी मुझ से होगी," गोविंद ने कहा।

"क्या बदतमीज़ी है?" नंदिनी उस पर बरस पड़ी "मुझसे ऐसी बात करने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई। गुस्से में राजकुमारी अपना आपा खो बैठी। उसने फूलों से भरी चाँदी की टोकरी गोविंद के सिर पर दे मारी और मुँह फेर कर महल के अंदर चली गई।

चाँदी की टोकरी गोविंद के माथे से जा टकराई। उसके माथे पर घाव हो गया और खून बहने लगा। उसे राजकुमारी की इस हरकत पर गुस्सा आ गया। गोविंद ने नीचे झुककर चाँदी की टोकरी उठांई और फाटक से बाहर निकल गया।

"अब फिर कभी इसका मुँह नहीं देखूँगा," उसने अपने घर की ओर जाते-जाते, मन-ही-मन सोच लिया।।

गोविंद ने तय कर लिया कि अब वह राजकुमारी के महल में नौकरी करने की बजाय कहीं दूर देश में जाकर काम खोजेगा।

दूसरे दिन उसने अपना सामान सँभाला और दूर देश की यात्रा पर रवाना हो गया। माथे पर चोट लगी होने के कारण उसके सिर पर पट्टी बँधी थी। चलते-चलते वह एक नगर में जा पहुँचा। वहाँ के लोग कोई आनंद-उत्सव जैसा मना रहे थे। सभी लोगों ने नए-नए कपड़े पहने हुए थे।

"यहाँ तो बड़ी चहल-पहल दिखाई दे रही है," गोविंद ने एक लड़के से पूछा, "यह किस खुशी में हो रहा है?"

"तुम्हें नहीं पता?" लड़के ने जवाब दिया, "आज हमारे नए राजा का चुनाव होगा।"

लड़के की बात सुनकर गोविंद ने जब इस बारे में जानने की इच्छा प्रकट की, तब लड़के ने बताया-"इस देश के राजा का अभी हाल में देहांत हुआ है," मरने से पहले राजा हुक्म दे गए हैं कि अगले राजा का चुनाव एक हाथी करे। आज वह हाथी नए राजा का चयन करने वाला है। यही वजह है कि इतने राजकुमार और सरदार नगर में आए हैं। आओ, हम भी चलें, खूब तमाशा रहेगा।"

गोविंद भी उस लड़के के साथ उस स्थान पर चला गया जहाँ लोग राजा का चयन

करने वाले हाथी का इंतज़ार कर रहे थे। थोड़ी देर में बाजे-गाजे के साथ शाही हाथी आया। उसे बहुत ही खूबसूरती से सजाया गया था। हाथी की सूँड़ में एक सुंदर हार था। उसने सभी राजकुमारों और सरदारों को देखा पर किसी के गले में हार नहीं डाला। जनता में उत्सुकता बढ़ती जा रही थी हर कोई हाथी को अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास कर रहा था। तभी हाथी अचानक गोविंद की ओर आ गया। हाथी रुक कर गोविंद को देखने लगा। उसने गोविंद के आगे झुककर उसके गले में हार पहना दिया।

गोविंद के गले में हार पड़ते ही शंख ध्वनि होने लगी, ढोल-नगाड़े बजने लगे। राज्य के मंत्री और कर्मचारी झुककर उसका सम्मान करने लगे।

गोविंद के हर्ष और आश्चर्य का ठिकाना न था। उसे अपने राजा बनने पर विश्वास नहीं हो रहा था।

गोविंद को उसी हाथी पर बिठाया गया। उसे जुलूस के रूप में राजदरबार में ले जाया गया। वहाँ उसका राज्याभिषेक कर दिया गया।

गोविंद एक समझदार, बुद्धिमान और नेकदिल राजा सिद्ध हुआ। प्रजा उसका बहुत सम्मान करती थी। उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गई। अब उसके विवाह का समय आ गया था।

नंदिनी के पिता चित्रदेव ने राजा गोविंद के पास अपनी पुत्री के साथ विवाह का संदेश भिजवाया। गोविंद तत्काल राज़ी हो गया। नंदिनी और गोविंद की शादी बड़ी धूमधाम से संपन्न हुई। राज्यभर में खुशियाँ मनाई गईं।

एक दिन नंदिनी ने अपने पति गोविंद से पूछा,"आपके माथे पर यह चोट का निशान कैसा है?" गोविंद ने मुस्कराकर कहा," यह विवाह का पवित्र चिह्न है।"

"मैं आपका मतलब समझी नहीं," नंदिनी ने कहा, "साफ-साफ बताइए।"

"यह निशान मेरे अच्छे भाग्य का चिह्न है। इसी ने मुझे राजा बनाया और इसी ने मुझे तुम्हारा पति भी बनाया है।" नंदिनी इस रहस्य को जानने को बेताब थी अत: बोली "सीधी तरह बताइए न"।

"अच्छी बात है," गोविंद ने कहा," तुम थोड़ी देर यहीं रुको, मैं अभी आता हूँ।"

इतना कहकर गोविंद कमरे से बाहर चला गया और थोड़ी देर में वह चाँदी की टोकरी लेकर लौट आया।

"याद करो, यह क्या है?" गोविंद ने पूछा। नंदिनी ने याद करते हुए कहा, "यह टोकरी तो मेरी है।" अब उसने गोविंद की ओर गौर से देखा। "गोविंद।" वह चौंककर बोली, "अब मैं

Scanned with CamScanner

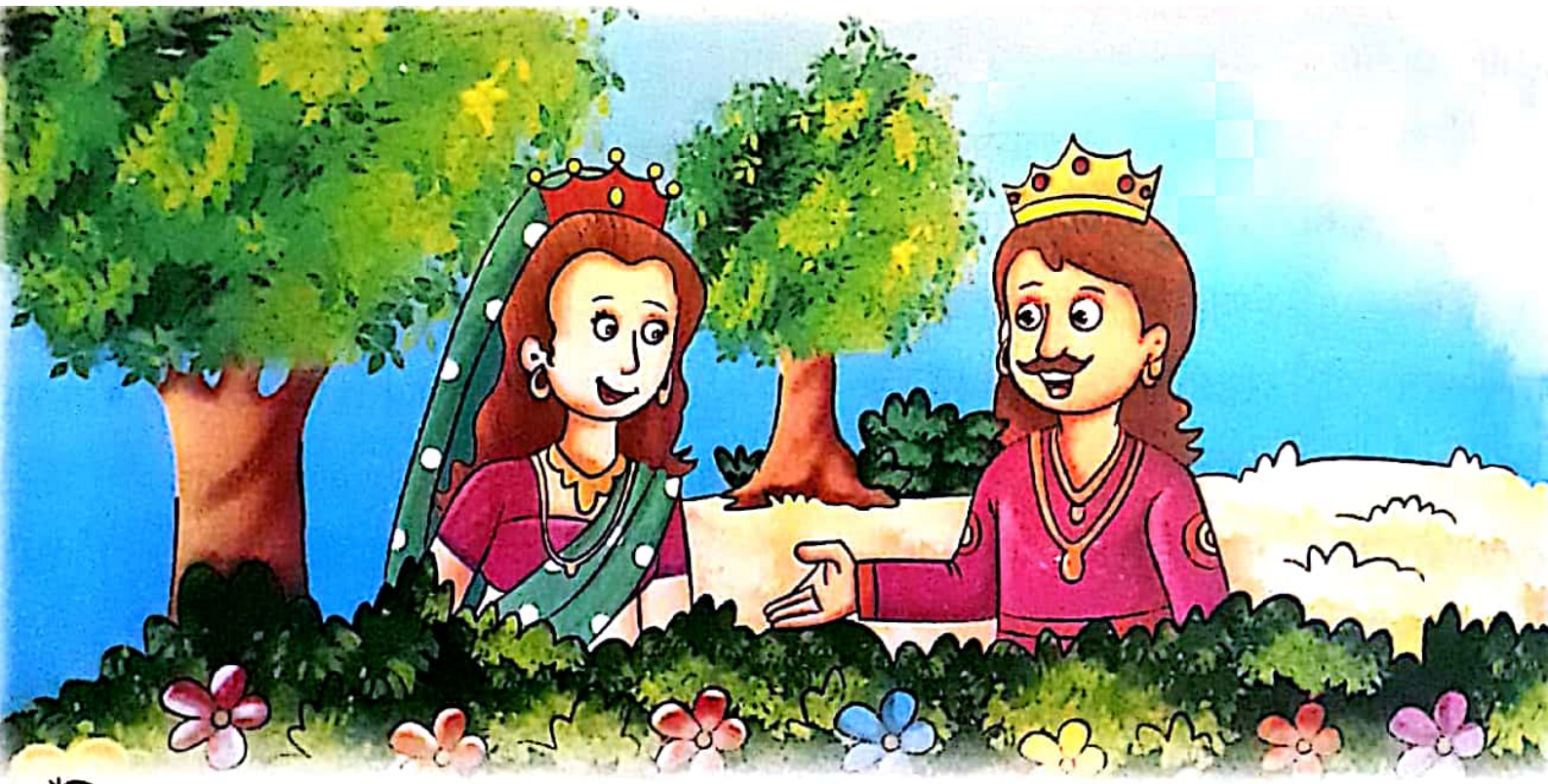

अध्यापन संकेत–

यह एक लोक कथा है। लोक कथा का अर्थ बच्चों को बताइए। कहानी को रोचक ढंग से सुनाइए।

शब्द ज्ञान

Scanned with CamScanner